

आंचलिकता का दर्पण है 'मैला आंचल'

अभिषेक, अब्दुल लतीफ

हिंदी विभाग, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर

Corresponding author: 8127abhishek@gmail.com

Available at <https://omniscientmjprujournal.com>

शोध सार

'मैला आँचल' को हिंदी का प्रथम आंचलिक उपन्यास माना जाता है। इसमें ग्रामीण जीवन का यथार्थ अंकन हुआ है। कथा में पूर्णिया जिले के मेरीगंज और उसके आस पास के क्षेत्र को केंद्र में रखकर रेणु जी ने भारतीय ग्राम्य जीवन का यथार्थरूप प्रस्तुत किया है। मेरीगंज की आर्थिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक एवम राजनैतिक परिस्थितियों को रेणु जी ने यहाँ प्रस्तुत किया है। कथानक का आधार मिथिलांचल का गाँव मेरीगंज है, जहाँ के वातावरण में अशिक्षा, अंधविश्वास, आडंबर, जातिवाद, जमींदारी, शोषण, लिंग भेद सभी कुछ व्याप्त है। लेकिन इस कीचड़ में भी कमल खिलने की आशा रेणु जी नहीं छोड़ते हैं। मेरीगंज में विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं। ब्राह्मण, यादव, ठाकुर, चमार आदि। यहाँ मजदूर भी हैं जमींदार भी, चोर भी हैं साहूकार भी, प्रेमी भी हैं और प्रेम के नाम पर शोषण करने वाले भी, भविष्यवाणी करने वाले ज्योतिषी भी हैं और गांधीवाद का झंडा फहराने वाले भी, खाऊ तहसीलदार भी हैं और निष्काम सेवा करने वाले डॉक्टर प्रशांत जैसे लोग भी, धर्म के नाम पर लोगों की आँख में धूल झोंकने वाले मठाधीश भी हैं और अंधभक्त भी। कथानक पूरी तरह आंचलिकता के कवर में लिपटा है। चाहे वह भाषा हो अथवा वातावरण, संवाद हों अथवा पात्र सभी आंचलिकता में डूबे हुए हैं। निश्चित रूप से यह हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास है।

बीज शब्द: आंचलिकता, अशिक्षा, जातिवाद, लिंग भेद, राजनैतिक, सांस्कृतिक, बिंबात्मक, घूसखोरी, शोषण, शोषित, आदर्श

प्रस्तावना

'मैला आँचल' हिंदी का प्रथम एवम श्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास है जिसका प्रथम प्रकाशन 1954 में हुआ। इसमें आजादी से पूर्व से आजादी के बाद तक के समय का अंकन हुआ है। इसमें रेणु जी ने मिथिलांचल को केंद्र में रख कर भारतीय ग्राम्य जीवन का बड़ा ही सरल अंकन किया। टूटी हुई आस्थाएँ, बिखरता हुआ देश, कुत्सित राजनीति, भ्रष्ट धार्मिकता और अशिक्षा को रेणु जी ने यहाँ उजागर किया है। मेरीगंज में डॉ० प्रशांत एक नव आशा के

प्रतीक के रूप में नजर आता है। वह समाज में एक नवीन परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। वहीं ममता आदर्श प्रेमिका और समाज सेविका के रूप में प्रस्तुत होती है।

उद्देश्य - प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य 'मैला आँचल' में उपस्थित आंचलिकता को उजागर करना है।

अनुसंधान विधि - प्रस्तुत शोध में विवेचनात्मक एवम विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया है।

विषय विवेचना एवं साहित्यिक विमर्श

आंचलिकता के सांदर्भिक अर्थ

जब कोई नया प्रयोग होता है तो उसमें कठिनाइयाँ भी आती हैं और उसकी आलोचना भी होती है। 'मैला आँचल' भी एक ऐसा ही प्रयोग था। 'रेणु' जी बिहार के गाँव से एक महानगर तक पहुँचते हैं और बीच के सफर में जो उन्होंने देखा उसे अपने उपन्यासों में उतार दिया। जीवन की गहरी समझ रखने वाले 'रेणु' जी ने आंचलिकता को सजीव करते हुए एक ऐसा रूप दिया जिस पर भावी आंचलिक कथाकारों ने अपने भवनों का निर्माण किया है। इससे पहले कि हम 'मैला आँचल' के विश्लेषण की ओर बढ़ें, हमें आंचलिकता के अर्थ को थोड़ा स्पष्ट कर लेना चाहिए। यँ तो आंचलिकता का अर्थ किसी क्षेत्र विशेष में पायी जाने वाली भौगोलिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों से लगाया जाता है। आंचलिकता के संबंध में अपने मत विद्वान अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

'आंचलिकता' शब्द का निर्माण अंचल शब्द से हुआ है। अंचल का सामान्य अर्थ किसी क्षेत्र विशेष से लगाया जाता है। वह अंचल विशेष जो अपनी अलग कुछ निश्चित विशेषताएं रखता है। एक निश्चित भौगोलिक सीमा में पाई जाने वाली सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक, राजनैतिक स्थितियों को उस क्षेत्र विशेष की आंचलिकता कहा जाता है।

शंभू सिंह अंचल के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- "अंचल शब्द मूलतः संस्कृत शब्द अचंचल है। जिसकी व्युत्पत्ति 'अंच' धातु में 'अलच्' प्रत्यय के योग से हुई है।"

वहीं देवेंद्र ठाकुर के अनुसार अंचल "सीमा या समीपवर्ती भाग" है।²

डॉ० राजकुमारी सिंह जी लिखती हैं -

"अंचल का अभिधामूलक अर्थ वस्त्र, प्रांत, भाग या पल्ला है, साहित्य में इसे देश के अर्थ में प्रयुक्त करते हैं। इस दृष्टि में कोई भी विशेष भाग या क्षेत्र जिसकी अपनी संस्कृति, रीति-रिवाज, सुख-दुख, जीवन प्रणाली, आचार-विचार व अपनी समस्याएँ एवं मान्यताएँ होती हैं, अंचल कहा जा सकता है।"³

इसका विभिन्न विद्वानों के मतों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि अंचल शब्द का तात्पर्य किसी क्षेत्र विशेष से ही लगाया जाता है।

इसी प्रकार उपरोक्त परिभाषाओं एवं आलोचकों के मतानुसार आंचलिकता का तात्पर्य किसी क्षेत्र विशेष में पाई जाने वाली भौगोलिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक मान्यताओं से है जहाँ निवास करने वाले लोगों की अपनी बोल-भाषा, खान-पान, रीति-रिवाज, तीज-त्यौहार, पूजा, मनोरंजन एवं अपना अलग पहनावा-ओढ़ावा होता है। अतः इस प्रकार हम देखें तो वे उपन्यास जिनमें किसी निश्चित भूभाग पर निवास करने वाले जन समूह की लोक-रीतियों, समस्याओं, मान्यताओं का अंकन किया जाता है, आंचलिक उपन्यास कहलाते हैं। इस प्रकार के उपन्यासों में संपूर्ण वातावरण ही नायकत्व की भूमिका में रहता है। उपन्यासकार उस अंचल विशेष के वातावरण को मूर्त कर देता है। दबा-कुचला, असहाय और कमजोर वर्ग अपनी पीड़ाओं के साथ उपस्थित होता है।

आंचलिकता की परिभाषा

इस आंचलिकता को आधार बनाकर लिखे गए उपन्यास आंचलिक उपन्यास कहलाए। आंचलिक उपन्यास को परिभाषित करते हुए ब्रजविलास जी लिखते हैं "परिचित अंचल विशेष को कथा का आधार बनाकर लिखा गया उपन्यास आंचलिक कहा जाएगा। मेरे ख्याल से वही आंचलिक उपन्यास अधिक सफल सिद्ध हो सकता है जिसमें कथा बुनने के लिए किसी ऐसे अंचल को चुना गया हो जिसकी विशेषताओं से लोग कम परिचित हों।"⁴

इसी संबंध में मृत्युंजय उपाध्याय जी का कथन भी दृष्टव्य है “आंचलिक उपन्यासों में निश्चय ही किसी एक अपरिचित एवं उपेक्षित ग्राम या भूखंड की आशा-आकांक्षाएं, विशेषताएं-दुर्बलताएं बड़ी ईमानदारी से चित्रित होती हैं। उस अंचल विशेष के प्रति आत्मीयता आंचलिक उपन्यासकार के लिए पहली और आखिरी शर्त है।”⁵

हिंदी रिव्यू मैगजीन में आंचलिक उपन्यास को इस प्रकार परिभाषित किया गया है “आंचलिक उपन्यास में लेखक देश के किसी विशेष भूभाग पर ध्यान केंद्रित करके उसके जीवन को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि पाठक उसकी अन्य विशेषताओं, विशिष्ट व्यक्तित्व, रीति परंपराओं तथा जीवन विद्या के प्रति सचेष्ट व आकृष्ट हो जाता है।”⁶

हिंदी साहित्य कोश में आंचलिक उपन्यास को इस प्रकार परिभाषित किया गया है “कुछ उपन्यासों में किसी प्रदेश विशेष का यथा तथ्य और बिंबात्मक चित्रण प्रधानता प्राप्त कर लेता है तो उन्हें प्रादेशिक या आंचलिक उपन्यास कहा जाता है।”⁷

मैला आंचल एवं आंचलिकता के सामाजिक सरोकार

समाज में होने वाली गतिविधियों का प्रभाव साहित्य पर सदैव परिरक्षित होता रहा है। साहित्य इतिहास के रूप में भी देखा जा सकता है। समाज के रूप को साहित्य सदैव ग्रहण करता रहा है और उसे पाठकों के सामने रोचक ढंग से प्रस्तुत करता रहा है। चाहे वह आदिकाल के युद्ध की विभीषिका हो या भक्तिकाल की टूटी आस्थाओं की पीड़ा, चाहे वह रीतिकाल की विलासिता हो अथवा आधुनिक काल की परतंत्रता की दुख भरी गाथा या स्वतंत्रता के लिए झटपटाती भारतीय आत्मा का दुख, भारतीय साहित्य समय-समय पर अपनी अलग-अलग विधाओं से समाज को मूर्त करता रहा है। जब आजादी की जंग लड़ी जा रही थी तो साहित्य भी उसमें अपना योगदान दे रहा था। रेणु जी ऐसे ही एक कथाकार हैं जिन्होंने इस क्रांति में प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया। न केवल कलम उठाई बल्कि आवश्यकता पड़ने पर नेपाल क्रांति में पिस्तौल भी उठाई और छात्र संघ का भी उन्होंने नेतृत्व किया है। उनकी आंखों में स्वतंत्र भारत का स्वर्णिम चित्र सदैव बना रहा है। हर भारतीय की तरह वह भी यह सोच रहे थे कि आजादी का उज्ज्वल सूर्य उदय होगा और उसका प्रकाश भारत के

कोने-कोने तक जाएगा। देश का उद्धार होगा मगर कुत्सित राजनीति ने सबके सपनों पर पानी फेर दिया दुष्पंत कुमार जी की पंक्तियां इसका यथार्थ रूप प्रस्तुत करती हैं

“कहाँ तो तय था चिरागा हर एक घर के लिए।

कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।।”

आजादी का प्रकाश धुंधला पड़ गया। कुछ क्षेत्रों में तो वह भी नहीं पहुँचा। ऐसे में लोगों का मन पीड़ा और कड़वाहट से भर गया। कवियों ने कविता की तो कथाकारों ने अपनी कहानी में उनके दर्द को उजागर किया। भला रेणु जी जैसा भावुक हृदय लेखक चुप कैसे रह सकता था। उनका अशांत मन कथा भूमि को खोजते-खोजते निकल गया पूर्णिया जिले के मेरीगंज की तरफ। मेरीगंज ने रेणु जी को ऐसा वातावरण दिया कि उन्होंने मैला आँचल को आंचलिकता के शिखर पर पहुँचा दिया। मिथिलांचल सजीव सा हो गया है इस उपन्यास में। इसे हिंदी का पहला मौलिक आंचलिक उपन्यास होने का गौरव प्राप्त है। कथानक का आधार मिथिलांचल का गाँव मेरीगंज है, जहाँ के वातावरण में अशिक्षा, अंधविश्वास, आडंबर, जातिवाद, जमींदारी, शोषण, लिंग भेद सभी कुछ व्याप्त है। लेकिन इस कीचड़ में भी कमल खिलने की आशा रेणु जी नहीं छोड़ते हैं। मेरीगंज में विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं। ब्राह्मण, यादव, ठाकुर, चमार आदि। यहां मजदूर भी हैं जमींदार भी, चोर भी हैं साहूकार भी, प्रेमी भी हैं और प्रेम के नाम पर शोषण करने वाले भी, भविष्यवाणी करने वाले ज्योतिषी भी हैं और गांधीवाद का झंडा फहराने वाले भी, खाऊ तहसीलदार भी हैं और निष्काम सेवा करने वाले डॉक्टर प्रशांत जैसे लोग भी, धर्म के नाम पर लोगों की आंख में धूल झोंकने वाले मठाधीश भी हैं और अंधभक्त भी। कथानक पूरी तरह आंचलिकता के कवर में लिपटा है। मेरीगंज और उसके आसपास का संपूर्ण वातावरण कथानक के विकास में सहायक रहा है। आंचलिकता का रंग इतना गहरा है कि पाठक सहज ही उसमें डूब जाता है। गाँव में जहां अंधकार ही अंधकार है वहाँ प्रकाश लेकर उपस्थित होते हैं डॉक्टर प्रशांत, समाज सेवी बलदेव और सत्य के लिए प्राण त्यागने वाले बावन।

पात्र, कथोपकथन एवं कथा विन्यास

बड़ा उपन्यास होने के कारण इसमें पात्रों की संख्या अधिक है। फिर भी उनका अंकन बड़े सजीव ढंग से हुआ है। हर पात्र कोई न कोई उद्देश्य लिए हुए है। हर पात्र किसी न किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहा है। कुछ पात्र प्रमुख हैं तो कुछ पात्र गौड़ हैं। अधिकांश पात्र ग्रामीण अंचल के हैं। उनका रहन-सहन, बोल भाषा सभी में स्थानीय रंग उभर कर सामने आए हैं। गाँव में यूँ तो लगभग हर जाति के लोग रहते हैं लेकिन तीन टोलियाँ प्रमुख रूप से हैं;

1. पहली राजपूत टोली जिसके मुखिया ठाकुर रामकृपाल सिंह हैं।
2. दूसरी है कायस्थ टोली जिसके मुखिया विश्वनाथ प्रसाद मल्लिक हैं। और
3. तीसरी टोली है यादव टोली जो नवनिर्मित है जिसके मुखिया खेलावन यादव हैं। एक अन्य प्रमुख टोली जिसको टोली का नाम नहीं दिया जाता जो तीसरी शक्ति का कार्य करती है वह ब्राह्मण टोली।

जैसा कि भारत के किसी भी गाँव में देखा जा सकता है कि आपस में किसी टोली की दूसरी टोली से नहीं बनती है और एक टोली ऐसी रहती है जो उनमें फूट डालने का कार्य करती है इस गाँव में ब्राह्मणों की संख्या कम है अतः वे सदा तीसरी शक्ति का कार्य ही करते रहे हैं जो सामंजस्य को भंग करने में लगे रहते हैं। गौड़ टोलियाँ इस प्रकार हैं; पोलियो टोली, तंत्रिमा टोली, यदुवंशी छत्री टोली, गहलोत टोली, अमात्य ब्राह्मण टोली, धनुर्धारी छत्री टोली, कुशवाहा छत्री टोली आदि।

प्रमुख पात्रों में नवीन आशा, नवीन विचारधारा, त्याग और समर्पण देखने को मिलता है जो उपन्यास का प्राण कहा जा सकता है। पुरुष पात्रों में पहला और केंद्र बिंदु में जो पात्र है वह डॉक्टर प्रशांत का चरित्र है। डॉक्टर प्रशांत उपन्यास का नायक कहा जा सकता है। वह सभी पात्रों में सबसे अधिक शिक्षित है। उसमें नव आशा, भावी भविष्य के प्रति आस्था है। कुछ कर गुजरने की चाह और हौसला है। वह कथा के केंद्र में है। अपने प्रकाश से वह संपूर्ण वातावरण को आलोकित करना चाहता है। डॉक्टर प्रशांत ममता से कहता है “ममता!

मैं फिर काम शुरू करूँगा - यहीं, इसी गाँव में मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ। आंसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहलहाएंगे। मैं साधना करूँगा, ग्रामवासिनी भारत माता के मैले आँचल तले! कम से कम एक ही गाँव के कुछ प्राणियों के मुरझाए होठों पर मुस्कुराहट लौटा सकूँ, उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित कर सकूँ।”⁸

वह पूरे मन से बीमार और लाचारों की सेवा करता है। उसका चरित्र आदर्शवादी है। वह रूढ़ियों का विरोधी एवम तर्क शक्ति का पोषक, शोषण का आलोचक है। कोमल हृदय, उदारता का प्रतीक है। पुरुष पात्रों में दूसरा पात्र बलदेव है। वह बहुत पढ़ा लिखा नहीं है किंतु स्वाधीनता के आंदोलन में उसने भाग लिया है और क्रांतिकारियों के साथ रहकर उसने बहुत सारे अनुभव इकट्ठे किए हैं। वह गांधीवादी विचारधारा का पोषक है। समाजवाद का अनुयाई है। हर जरूरतमंद की निस्वार्थ भाव से सेव करना अपना प्रथम कर्तव्य समझता है। अशिक्षित होते हुए भी उसमें नव आशा का प्रकाश है। वह समानता का पोषक है। उसमें ग्रामीण एवं नगरीय दोनों लक्षण दिखाई देते हैं। यह उसके गहन अनुभव का परिणाम है। किरानी का यह कथन दृष्टव्य है “अरे यह तो बालदेव है। सर, रामकृष्ण कांग्रेस आश्रम का कार्यकर्ता है, बड़ा बहादुर है।”⁹

बलदेव का स्वयं ही यह कथन “पियारे भाइयो, आप लोग जो आंदोलन किए हैं, वह अच्छा नहीं। अपना कान देखे बिना कौए के पीछे नहीं दौड़ना अच्छा नहीं। आप ही सोचिए, क्या ये समझदार आदमी का काम है। आप लोग हिंसावाद करने जा रहे थे। इसके लिए हमको अनसन करना होगा। भारथमाता का, गांधीजी का यह रास्ता नहीं...”¹⁰ उसके अहिंसावादी होने के प्रमाण है। तीसरे पुरुष पात्र की भूमिका में तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद हैं जो दूसरे सर्वाधिक शिक्षित व्यक्ति हैं। वे कायस्थ टोली के मुखिया हैं। घूसखोरी उनकी प्रमुख विशेषता है। डाली, चढ़ावा उनको मिलता ही रहता है इसकी दम पर ही वे धनी हैं। वह कथा की नायिका कमला के पिता हैं। रेणु जी लिखते हैं “कायस्थ टोली के मुखिया विश्वनाथ प्रसाद मल्लिक, राज पार बंगा के तहसीलदार हैं। तहसीलदारी उनके खानदान में

तीन पुस्त से चली आ रही है। इसी के बल पर तहसीलदार साहब आज एक हजार बीघा जमीन के एक बड़े काश्तकार हैं।¹¹

उनके बाद ठाकुर रामकृपाल सिंह जिनके बारे में रेणु जी कहते कि वे अनपढ़ होते हुए भी एक बड़े घराने से होने के कारण गाँव में उच्च स्थान पर हैं। अन्य प्रमुख पात्र है खेलावन यादव जिसके बारे में रेणु जी लिखते हैं “यादवों का दल नया है। उनके मुखिया खेलावन यादव को दस वर्ष पहले तक लोगों ने भैंस चराते देखा है। दूध-घी की बिक्री से जमा हुए पैसे ही बात जब चारों ओर बुरी तरह फैल गई तो खेलावन को बड़ी चिंता हुई। महीनों तहसीलदार के यहां दौड़ते रहे सर्किल मैनेजर को डाली चढ़ाई, सिपाहियों को दूध-घी पिलाया और अंत में कमला के किनारे पचास बीघे जमीन की बंदोबस्ती हो सकी। अब तो डेढ़ सौ बीघा की जोत है।”¹²

कालीचरण जोशीला नौजवान है जो गरम दल का पोषक, साम्यवादी विचारधारा अपनाने वाला व्यक्ति है। महंत धर्म के नाम पर सबको मूर्ख बनाने वाला पाखंडी, ढोंगी, कमी पुरुष है जो अपनी कामवासना के लिए लक्ष्मी का प्रयोग करता है और अंततः काम पीड़ा से ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। वामन दास गांधी बात का पोषक है और देश के लिए अपने प्राण देकर अपना कर्तव्य पूरा करने वाला सच्चा देशभक्त है। रामदास मठ का सेवक और अंधभक्त है।

स्त्री पात्रों में कमला कथा की नायिका कही जा सकती है। वह नवीन विचारधारा की पोषक और सुशील विचारों वाली नायिका है। वह तहसीलदार की पुत्री है। डॉक्टर प्रशांत से उसे प्रेम होता है अंततः उसकी पत्नी हो जाती है। ममता दूसरी प्रमुख पात्रा है। उसके चरित्र में त्याग, आत्मसमर्पण कूट-कूट कर भरा हुआ है। वह कथा के उपनायिका है। वह आदर्श प्रेमिका है। डॉक्टर प्रशांत से अथाह प्रेम करती है फिर भी वह कमला के लिए और उसके बच्चे के लिए अपना सब कुछ निछावर करने को तैयार है। वह ममता से जरा भी नहीं जलती है। वह उसके बच्चे को अपना बच्चा मानती है। उसका यह त्याग सराहनीय है। ममता के

शब्द तो देखिए “मन करता है, किसी को आँचल पसारकर आशीर्वाद दूँ- तुम सफल होओ।
मन करता है, किसी कर्मयोगी के बड़े हुए चरणों की धूलि लेकर कहूँ....”¹³

लक्ष्मी मठ की दासी भी है और मालकिन भी। वह एक शोषित स्त्री है जो विरोध करना भी नहीं जानती। फिर भी वह देश भर में चल रही गतिविधियों से परिचित है। उसके चरित्र में स्थायित्व नहीं है। उसका जीवन धार्मिक होते हुए अधार्मिक है। अधिकांश पात्र ग्रामीण एवं अशिक्षित हैं। पात्रों के विषय में रेणु जी लिखते हैं “सारे मेरीगंज में दस आदमी पढ़े-लिखे हैं पढ़े-लिखे का मतलब हुआ अपना दस्तखत करने से लेकर तहसीलदारी करने तक की पढ़ाई। नए पढ़ने वालों की संख्या है पंद्रह।”¹⁴

गांव वाले सीधे जरूर हैं लेकिन उनकी चतुराई किसी से छुपी नहीं है। डॉ० प्रशांत के शब्दों में “गाँव के लोग बड़े सीधे दीखते हैं; सीधे का अर्थ यदि अपढ़, अज्ञानी और अंधविश्वासी हो तो वास्तव में सीधे हैं वे। जहां तक सांसारिक बुद्धि का सवाल है, वह हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पांच बार ठग लेंगे और तारीफ यह है कि तुम ठगी जाकर भी उनकी सरलता पर मुग्ध होने के लिए मजबूर हो जाओगी।”¹⁵

भाषिक विन्यास में आंचलिकता का प्रतिबिम्बन

उपन्यास के संवादों में मिथिलांचल की खुशबू सर्वत्र व्याप्त है। ग्रामीणों की जो भाषा होती है रेणु जी ने उसे ही चुना है जो संवादों को सजीव और मूर्त करने में सफल है। संवादों सहजता भी है और भावों की कोमलता भी। संवादों में स्थानीय रंग, अशिक्षा, भोलापन, व्यजनात्मकता और वाक् चातुर्य स्पष्ट दिखाई देता है। सीताराम को ‘सेताराम’ प्यारे को ‘पियारे’ डॉक्टर को ‘डागडर’ कहते हैं गांव वाले।

कुछ संवाद देखिए.....

“तेरी जात को मच्छर काटे, चुप साले। चुप साले! कुत्ते के बच्चे! अभी कुलहाड़े से तेरा....! तेरी मां को...।”

“चुप रह बदमाश!”

जहां शिक्षित लोग बात करते हैं वहां संवादों में खड़ी बोली हिंदी (हिंदुस्तानी) का स्वरूप दिखाई देता है। संवाद भावानुकूल हैं। जहां उपदेशात्मक हैं वे कुछ लंबे हो गए हैं।

मिथिलांचल का एक गांव मेरीगंज कथा के केंद्र में। मेरीगंज के आस पास के क्षेत्र अंकन भी हुआ है। रेणु जी ने मेरीगंज के बाग, मकान, पेड़ पौधे, नदी, ताल बाजार, रेलवे स्टेशन आदि का चित्रण करते हुए उसे उपन्यास को सफल बना दिया है। वहां के वातावरण में अशिक्षा, अज्ञान, ढोंग, शोषण, जातिवाद, कुत्सित राजनीति, ओछी विचारधारा आदि तत्व उपन्यास को आंचलिक बनाने में महत्वपूर्ण रहे हैं। रेणु जी भूमिका में लिखते हैं “यह है मैला आंचल, एक आंचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बाहर राज्य का जिला है; इसके एक ओर है नेपाल, दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल।.....इसमें फूल भी हैं, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी; कीचड़ भी है, चंदन भी; सुंदरता भी है, कुरूपता भी- मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया।”⁷

अशिक्षित गांव वालों की भाषा में ग्रामीण शब्दों की अधिकता है तथा शिक्षित पात्रों में खड़ी बोली के शब्दों की। साथ ही हिंदी, अंग्रेजी, और आंचलिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। संवाद मनोभावों को व्यक्त करने में पूर्णतः सफल हुए हैं। यथा-

“अरे बेटा रे! गौरी बेटा रे! आँगन में आ जा बेटा रे! गुअरटोली का कलिया पगला गया है।”⁸

भाषा में लोकगीत, मुहावरे एवं आंचलिक शब्दों के साथ वर्णनात्मक, काव्यात्मक एवं मनोवैज्ञानिक शैली का प्रयोग हुआ है, जिससे भाषा सजीव हो उठी है। होली, कीर्तन मंगलगीत जैसी लोक गीतों ने, मुहावरों कहावतों ने भाषा को सशक्त बनाया है। भाषा शैली पूर्णतः आंचलिक है। भाषा में कहीं बनावटीपन नहीं है। भाषा शसक्त एवम जीवंत है।

इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने पूर्णिया जिले को केंद्र में रखकर संपूर्ण भारत में फैले भ्रष्टाचार, ढोंग, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों को उजागर करते हुए उनको

उपाध्याय डॉ० मृत्युंजय, प्रथम संस्करण
(1989), हिंदी के आंचलिक उपन्यास,
चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ०
संख्या - 17

डॉ० राजकुमारी सिंह, हिंदी तथा अंग्रेजी
के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन,
शोधगंगा, पृ० संख्या - 18

देवेन्द्र ठाकुर, द्वितीय संस्करण, (2007),
मैला आंचल की रचना प्रक्रिया, वाणी
प्रकाशन नई दिल्ली, पृ० संख्या - 10

फणीश्वरनाथ रेणु, 23 वाँ संस्करण (2016),
मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन नई
दिल्ली, प्र० संख्या - 227

फणीश्वरनाथ रेणु, 23 वाँ संस्करण (2016),
मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन नई
दिल्ली, पृ० संख्या - 227

फणीश्वरनाथ रेणु, 23 वाँ संस्करण (2016),
मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन नई
दिल्ली, पृ० संख्या - 227

फणीश्वरनाथ रेणु, 23 वाँ संस्करण (2016),
मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन नई
दिल्ली, पृ० संख्या - 227

फणीश्वरनाथ रेणु, 23 वाँ संस्करण (2016),
मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन नई
दिल्ली, पृ० संख्या - 227

फणीश्वरनाथ रेणु, 23 वाँ संस्करण (2016),
मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन नई
दिल्ली, पृ० संख्या - 227

फणीश्वरनाथ रेणु, 23 वाँ संस्करण (2016),
मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन नई
दिल्ली, पृ० संख्या - 227

फणीश्वरनाथ रेणु, 23 वाँ संस्करण (2016),
मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन नई
दिल्ली, पृ० संख्या - 227

फणीश्वरनाथ रेणु, 23 वाँ संस्करण (2016),
मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन नई
दिल्ली, पृ० संख्या - 227

फणीश्वरनाथ रेणु, 23 वाँ संस्करण (2016),
मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन नई
दिल्ली, प्र० संख्या - 227

फणीश्वरनाथ रेणु, 23 वाँ संस्करण (2016),
मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन नई
दिल्ली, पृ० संख्या - 227

ब्रजविलास श्रीवास्तव, (17 जनवरी 1956),
आलोचना, हिंदी में नए प्रयोग

शंभू सिंह, (1977), रांगेय राघव और
आंचलिक उपन्यास, पृ०- संख्या - 11

हिंदी रिव्यू मैगजीन, (19 मई 1956), रीसेंट
टैंडनसीज इन हिंदी फिक्शन

हिंदी साहित्य कोश, (भाग 1), (द्वितीय संस्करण), ज्ञान मण्डल, वाराणसी, पृ० संख्या - 156